International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 67-69

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 67-69
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-03-2017
Accepted: 14-04-2017

डॉ. एस.एस गौतम
संस्कृत विभाग, स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय दतिया, मध्य प्रदेश, भारत

रानी वघेल
संस्कृत विभाग, स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय दतिया, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ.एस.एस गौतम
संस्कृत विभाग, स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय दतिया, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. इच्छाराम द्विवेदी ''प्रणव'' द्वारा रचित मित्रदूतम्' काव्य का अनुशीलन

डॉ. एस.एस गौतम, रानी वघेल

''नाल्यस्य तपसः फलम्'' यह उक्ति जिन महनीय व्यक्तियों पर चरितार्थ होती है आचार्य डॉ. इच्छाराम द्विवेदी ''प्रणव'' उनमें से एक है। एक साधक, कवि, विचारक, मनीषी और एक प्रखर वक्ता होने के साथ ही वे अत्यन्त सरल व्यक्तित्व के धनी हैं। अपने स्वाध्याय प्रवचनरूपी तप से अहर्निश वर्द्धमान उनकी साहित्य यात्रा नित्य नये सोपानों का आरोहरण करती जा रही है। 'प्रणव रचनावली'' महाकवि प्रणव के समग्र साहित्य का संग्राथित रूप है। जिसका एक खण्ड मित्रदूतम्'' है।' मिश्रदूतम नामक काव्य मं आचार्य डॉ. इच्छाराम द्विवेदी जी ने अपने सुहृद मित्र रमाकान्त शुक्ल को हिमालय की यात्रा से लौटकर लिखे पत्र का वर्णन किया है, जिसमें उन्होंने अपने मित्र को उत्तराखण्ड की सुखद, समृद्ध व शीतलता प्रदान करने वाले वातावरण के बारे में बताया है। उनका मिश्र इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में निवास करते थे। वह अपने जीवन में केवल हिमालय की यात्रा करना चाहते थे वह उसे भारत का प्रहरी व अमिट मानकर उसको देखना चाहते थे, उन्होंने हिमालय के सौन्दर्यी करण के बारे में काफी सुना था हिमालय पर्वत पर कई ऋषि मुनियों ने तपस्या की। भारत की पवित्र नदी गंगा का उद्गम स्थल भी हिमालय है। इस अध्याय में इच्छाराम जी के मित्र ने उनसे निवेदन करते हुए कहा था कि वह उन्हें हिमालय की यात्रा पर ले चले। वह भारत में स्थित अमिट वैभवशाली समस्त ज्योतिर्लिडों के दर्शन करना चाहते थे इच्छाराम द्विवेदी जी हिमालय पर्वत से धूमकर बापस अपने घर लौटे तो उनके प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन कर उन्होंने रमाकान्त शुक्ल जी को यह पत्र लिखा था। इस पत्र को इच्छाराम जी अपने जीवन का सबसे अमूल्य पत्र मानते है। इसे उन्होंने अपनी कृति 'प्रणवरचनावली' के 'मित्रदूतम' नामक अध्याय में सम्मिलित किया है। इस पत्र में उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में वर्णन करते कहा है।

> ''तेषां हित्वा कट्कमशिवं गायनं सम्प्रयाहि,
> पत्न्या सार्द्ध शिवचरणयोर्दिव्यलोके पवित्रे।
> इन्द्रप्रस्थाद् द्रूततरगतौ वाहने सन्निरूढ़ः,
> शान्त्यर्थ के न हि ऋषिगणाः पर्वतान् संश्रयन्ते।।''1

उन्होंने अपने मिश्र को हिमालय की यात्रा करने के लिए कहते हुए सम्पूर्ण यात्रा का वर्णन किया है। मैं अपने मिश्र देवेद्रजी के साथ कार से हिमालय की यात्रा पर गया था। मेरे साथ मेरी पत्नी भी इस यात्रा में शामिल थी। उन्होंने हिमालय के मनोहर तथा रमणीय वातारण का वर्णन करते हुए उसकी काफी प्रशंसा की है। आगे उन्होंने बताया कि मिश्र सर्वप्रथम रास्ते में यमुना नदी के दर्शन होगे। उसमें स्नान करने से सभी को सुख व शांति की प्राप्ति होती है। स्नान के पश्चात् जगजननी महाकाली का मंदिर में नतमस्तक करना। उनको नमन करने से साधकों को मंगल की प्राप्ति होती है, और आगे जाने पर मार्ग मं प्रवाहित हो रही निर्मल गंगा नदी में पुनः स्नान करने पर मनुष्य के मन की चंचलता खत्म हो जाती है। तुम्हे भी उसमें स्नान करना चाहिए। जब तुम उस नदी में स्नान करोगे तो स्नान करते समय तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा मानो जैसे तुम्हारें समस्त कालेजनित पाप शुद्ध गंगाजल में तीव्रता से विलीन हो रहे हो। स्नान करने के पश्चात् तुम पर्वतकरूणारूपा श्री मनसादेवी के दर्शन करना। उनके दर्शन करने हेतु तुम्हें गंगा नदी को पार करना पड़ेगा जिसे पार करने हेतु तुम्हें उड़न खटोला की सहायता लेनी पड़ेगी। यह मंदिर कांच के टुकड़ों से निर्मित है।

नत्वा देवीं प्रचल झटिति एवं कवे शैवधाम्नि
अग्रे बन्धो कुरू गमनकं पुण्यकेदारखण्डे।
यत्रास्ते भोः परमशिवदो भूतभव्यान्तरात्मा
भूतेशोऽसावजह रिनुतश्चन्द्रमौलिः शिवो नः।।''2

उन्होंने देवी गंगा को प्रणाम कर आगे चलने को शीघ्र कहा है क्योकि भगवान शिव के पवित्र केदारखण्ड के लिये आगे की यात्रा करों जहॉ परम कल्याण कर प्राणी मात्र के आत्मा स्वरूप विष्णु से नमस्कृत चन्द्रमौलि वे हमारे भगवान शिव विराजते है ओर इसके आगे के लिए कवि प्रणव अपने मिश्र से कहते है कि काशी के पास से एक सुन्दर स्थान का वर्णन है।

पूर्वं तावद्द्रुततरगतौ काशि कामुत्तरीयां
यावद गत्वा तदनु सुकवे लंघयित्वा च गगाम्।
वामात्तीराच्च्लतु टिहरीं श्री विशालां विशालां।
नद्या बन्धः प्रचलति यतो नित्य लोकै निरूद्धः।। 3

वह अपने मिश्र को कहते है कि पहले तो तीव्र गति से उत्तर दिशा काशी तक चलो वहॉ से गंगा को पार कर उसके बांये तट से लक्ष्मी स्फीत
टिहरी नामक स्थान तक चलना जहॉ जनता के द्वारा नित्य मना करने के बावजूद नदी पर बांध बनाया जा रहा है तुम्हे आगे टहरी तक शांत मार्ग है मिश्र सायं काल तक तुम्हारी लंबी यात्रा होगी। सायं काल श्रीनगर नामक रमणीय स्थान पर जल से पूर्ण अलक नन्द नदी के विशाल तट पर प्रसन्न होकर पहुंचोगे।
अतः श्रीनगर के अतुल और वैभव से पूर्ण ऊॅचे भवनों एवं प्रचूर दुकानों से दिल्ली का स्मरण करता है। यहॉ तुम्हे किसी प्रकार की कठिनाई से ही मॅहगा आवास मिलेगा इसके बाद कवि प्रातःकला पुनः रूद्रप्रयाग की ओर चलने को भी कहते हुए लिखते है

मन्दाकिन्या बिमललनिवहा वारिधारा पवित्रा
नन्दानीरैर्मिलति मुदिते हैव रूद्रपयागे।
सुभ्रश्यामे सलिल मिलने नित्यमेवात्र देशे
प्रातः सायं मिलनसुषमां को न साक्षात्करोति।। 4

प्रसाग में ही पवित्र मंदाकनी नदी सी अत्यन्त विमल जल धारा अलकनन्दा के किंचिंत श्याम जल के मिलने से नित्य ही प्रातःकाल एवं सायंकाल के मिलने के समान दृश्य का कौन साक्षात्कार नहीं करता है अर्थात सभी करते है।
कवि अपने मित्र श्री रमाकांत शुक्ल को यात्रा में वे सभी झरने, पर्वत,नदियॉ आदि का विशाल वर्णन उनके हदय में प्राप्त है वह यात्रा का सादृश्य वर्णन कहते हुए कहते है–

हैमाच्छैलात्पतति गहने वारिधारातिगीता
मन्दाकिन्या न च जलचये कोऽपि शक्तोऽवगाहे।
आचम्य त्वं सूविरादतमें प्रागंणे मन्दिरस्य।
केदारेशं जनिभयहरं दर्शनार्थं प्रयाहि ।। 5

वर्फ के पहाड़ से अतिशीतल जल धारा नीचे गिरती है। अतः मंदाकनी के जल में कोई भी स्नान करने में समर्थ नहीं होता तुम आचमन करके मंदिर के विशाल प्रांगण में जन्ममृत्युभयकारी केदारेश्वर शिव के दर्शन हेतु जाना।
इस प्रकार कवि अपने मित्र से कहते है कि यह सुखद यात्रा जो मेरे मन में बसी है उसका आनन्दानुभव आप भी स्वयं मेरी तरह कर और सभी तीर्थो का पुण्य प्राप्त कर नयनगोचर होगा।
इसकी चमक दूर–दूर तक फैली हुई दिखाई देती है। इसके आगे जाने पर भारत के सबसे ऊॅचे मंदिर हरिद्वार नगर के दर्शन करना। हरिद्वार के पश्चिम में स्थित विशाल नगर देहरादून है यह स्थान चावल की खेती के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहॉ से कुछ दूरी पर मंसूरी नामक स्थल है जो शिखर, सघन वनों मेघ खण्डों एवं ऊॅचे नीचे सुन्दर भवनों से सुशोभित है। काव्य में यहॉ की सुन्दरता का वर्णन कुछ इस प्रकार किया गया है–

''तुगैः श्रृगै : सघनवनकैमेंघखण्डैरूपेतां,
उच्चैर्नीचैर्ललितभवनैः शोभितां तां मसूरीम्।
विघुद्दीपैविलसिततनुं वीक्ष्य नूनं रजन्यां,
स्वर्गानन्द त्यजति सहसा भावना दर्शकानाम्।।''6

इसके आगे का रास्ता अत्यंत शीतलता प्रदान करने वाला है। यह मार्ग घने वृक्षों की छाया से ढका है। यहॉ प्रवाहित हो रहे झरनों का बर्फीला पानी एक क्षण में अन्तस्ताप को दूर कर देता है। आगे हनुमान चट्टी है यहॉ सामान छोड़कर हाथ में लाठी लेकर पैदल यात्रा करनी पड़ती है। यहॉ प्रवाहित हो रही नदी के तट की सुषमा सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। हिमालय को पिता व यमुना को उसकी बेटी के रूप में बताते हुए उनकी वंदना की है। उदाहरण दृण्टव्य है–

'' कल्लोलैर्या विनतवदना हेमकूटात्पतन्ती,
हैमाद्रौ सा जनक सदने बाल्यभावं भजन्ती।
कृडारामे मुखरमुखरा रोदसी पूरयन्ती,
कालिन्द्येषा कलिमलहारा वर्ततेऽद्यापि वन्द्या।।''7

यमुना नदी के आगे परम रमणीय सुरम्य गंगोत्री नामक द्वितीय तीर्थ यात्रा प्रारंभ हो जायेगी। यहॉ भागीरथी के कलिमलहारीदिव्य तट के किनारे पर देखने से नेत्रों को अनुपम आनन्द की प्राप्ति होती हैं यहॉ सर्वप्रथम धरास् नामक स्थान मिलेगा। आगे जान्हवीं नामक सरिता के दर्शन होगे। यहॉ हर्सिल में ही पूर्व काल में जहू ऋषि का आश्रम इस नदी ने वहा डाला था। तभी से इस नदी का नाम जान्हवीं पड़ा। यहॉ पर ऊॅची एवं टूटी–फूटी भाग्य संकरी मार्ग भूमि पगडण्डी है। जिसमें बीच–बीच में स्वच्छ आकार वाले स्फटिक जैसे झरने बहुतायत है। आगे घना जंगल है। जहॉ धीर सैनिकों से घिरी लंका नामक नगरी है। जिसकी रक्षा बीर रक्षकों के द्वारा विविध प्रकार से की जाती है। सायं के समय सूर्य के मुख के रक्त वर्ण होने पर हिमालय का बर्फीला मुख भी रक्त होने पर दिशा रूपी नायिका के रूप में प्रतीत होता है।

''ब्रम्हानन्दाकुलितविभवा वेदधोपैरूपेता,
रम्योत्सगे हिमगिरिगृहे वर्तते खण्डभूता।
पुज्जीभूता मुनिकुलयुता ब्रम्हालोकस्य पुण्या,
गंगोत्तर्या मधुर रचना भूतले काप्यपूर्वा।।''8

गंगा नदी अपने मंदिर में सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा के रूप में कालिन्दी इत्यादि स्वजनों के साथ नारदादि भक्तों के साथ विराजती है। यहॉ समस्त भक्तगण घंटा बजाते हुए जयजयकार करते हुए गंगा की नित्य ही पूजा करते है। यहॉ से आगे पवित्र स्थल प्रयाग है। प्रयाग के बाद तिलवाड़ा और उसके दो–तीन कोस आगे सोन प्रयाग नामक तीर्थस्थल है। सोनप्रयाग की प्रकृतिक सौंदर्यता देखने हेतु श्रृद्धालु पत्थरों से बने टेढे–मेढे मार्ग पर लाठी लेकर चलते हैं आगे रामबाड़ा नामक स्थान पर लोग कुछ देर विश्राम करते है। यहॉ की प्राकृतिक सौंदर्यता का वर्णन कवि ने कुछ इस प्रकार किया है। उदाहरण दृष्टव्य है–

'अत्युन्तुगा हिमगिरिशिला हैमवस्त्रं दधानाः,
स्त्रोतोव्याजैः प्रकृतिरमणी चीरकं दर्शयन्ती।
स्वीयारामे गिरिपतिसुता निश्छलं क्रीडमाना,
केदारेऽस्मिज्जलधर गणैर्नन्दिता नित्यमास्ते।''9

यहॉ से आगे केदारनाथ नामक तीर्थ स्थल है। यहॉ कृष्ण, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, युधिठिर, कुन्ती, द्रौपदी आदि की मूर्तियॉ सुशोभित है। यहॉ भगवान नर नारायण के द्वारा प्रदत्त सुख से भयभीत कामदेव यहॉ से उर्वशी नामक अप्सरा को प्राप्त करके स्वर्ग गया था। इसके पश्चात् श्री हरी

का एक भक्त भागवत पुराण, रूपी सरसकल का भोक्ता उद्धव नाम का विद्धान यहॉ आया जो आत्माराम था, और दशमस्कन्ध के पाठ से मुक्ति पा गया था। यहॉ पर कर्ण सुखद वैदिक मंत्रो को विप्रगढ़ पढ़ते है यहॉ पर जदरिकेश, नर उर्वशी, उद्धव पक्षिराजगरूढ़ एवं देवर्षिनारद की मुर्तियॉ है यहॉ प्रसाद के रूप में श्री हरी के मुख से उच्छिण्ट मीठे चावल एवं लड्डू मिलते है प्रसाद ग्रहरण कर सभी लोग।

लोग आगे स्थित शंकराचार्य पीठ को जाते है। विमल अद्धैत सिद्धान्त के संस्थापक ये आचार्य आदि शंकर यहॉ शिष्यों के साथ निवास करते है। इन्ही के द्वारा यह रूचिर बदरीनाथ जी का मंदिर स्थापित किया गया था। अंत में कवि ने अपने पत्र में अविस्मरणीय भूल के लिए क्षमायाचना की है।

> ''अस्मिन्काव्ये तव महिमनि स्याद्ध्रुवं दोषराशिः,
> क्षन्तव्योऽहं विकलकरणस्त्त्वं दिभो। सर्ववेता।'
> यद्वा वर्ण्य प्रमदविधिना च्यावितं तद्वि सर्वं,
> स्मेरालोके तव जगपते पूर्णता यातु सघः।।''10

अतः निष्कर्ण रूप से कहा जा सकता है कि आचार्य इच्छाराम द्विवेदी जी ने अपने इस काव्य मं यमुनौत्री, गंगौत्री, केदारनाथ और बद्ररीनाथ रूपी चार धामों का वर्णन किया है। मित्रदूत' में गंगा की रमणीय महिमा का उत्कर्ण और हिमालय भूमि की सौदर्य सुषमा की जय का उल्लेख है।

संदर्भ – सूची

1. प्रणवरचनावली, डॉ. इच्दाराम द्विवेदी प्रणवः देववाणी दिल्ली सन–2004, पृष्ठ 58/11
2. ,, ,, ,, ,, ,, ,, 62/20
3. , ,, ,, ,, ,, 67/34
4. ,, ,, ,, ,, ,, ,, 75/56
5. ,, ,, ,, ,, ,, ,, 82/77
6. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, 64/78
7. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, 65/78
8. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, 79/83
9. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, 93/106